मानना पड़ेगा। लोग कहते हैं आज भारत में रहने वाला, इस्लाम को मानने वाला, भारत में रहने वाला, इसाईयत को मानने वाला दस पीढ़ी, ग्यारह पीढ़ी, बीस पीढ़ी पीछे चला जाय कौन है। लेकिन इस प्रकार के गलत विचारों को लेकर चलने के कारण इसी देश के मूल निवासी होने के बाद भी इसी देश के संत भी अपने आपको न मानने के अभाव में न भारत माता की जय कहते हैं न भारत के बारे में सोचते हैं और इस प्रकार की दुर्भाग्यपूर्ण स्थिति हो गई। अगर भारत में रहने वाले किसी भी सम्प्रदाय किसी भी पूजा पद्धति को मानने वाले अगर इस बात को स्वीकार कर लेते हैं कि हम इसी देश की संतति हैं और हमारे सब के पूर्वज एक हैं तो सारे संकुचित और संघर्ष के विषय समाप्त हो जायेंगे। इसकी आवश्यकता है और इसको करना पड़ेगा। एक और बात आती है सारे देश को जोड़ने वाला एक ही विषय है और वह है भारत माता की पूजा। भारत माता यही हमारी देवता है। ये सारा समाज माने। और इसलिए इस बात को एक रखने की आवश्यकता है। एक बात और ध्यान में आती है कि कई प्रकार की बातों के कारण हम अपने कौन, पराये कौन इसको भी हम कभी-कभी भूल जाते हैं।

अपने कौन हैं, पराये कौन है, दुर्भाग्य से हमने आक्रान्ताओं को भी अपना माना। जो आक्रमण करने के लिए आए हैं। आक्रांताओं ने यहां पर स्थापित की हुई बातें गुलामी की प्रतीक हैं उनको मिटाना चाहिए और यहां की प्रतिमाओं को प्रवृत करना चाहिए। नहीं हुआ। जो मुगल सम्राट बाहर से आक्रांता के रूप में आए। उन्होंने अपने विजय के प्रतीक के रूप में कुतुब मीनार बनाया। हम बड़े शान से शौक से देखने के लिए जाते हैं। और कहते हैं कि भारत का गौरव देखिए कुतुब मीनार। भारत में आक्रमण करते हुए आक्रांताओं ने अपने नामों को यहां पर रखा। क्या होता है दिल्ली का कनॉट प्लेस, क्यों है, अभी तक नाम रखा हुआ। कौन है कनॉट? आज अगर बच्चे पूछेंगे कनॉट कौन है तो हम बता सकते हैं क्या? तो अपना पराया कौन?

दिल्ली में जहां पर शासन के शासकीय प्रतिनिधि रहते हैं, शासन को चलाने वाले लोग रहते हैं, शासन का कारोबार जहां से चलता है उस सारे एरिया का नाम है नार्थ एवेन्यू और साउथ एवेन्यू। ये क्या है, नार्थ एवेन्यू और साउथ एवेन्यू? अंग्रेज जब यहां पर थे उन्होंने बसाया था नार्थ एवेन्यू, साउथ एवेन्यू । तो हमने सारे गुलामी के प्रतीकों को अपना माना, पराया नहीं माना। अयोध्या में ढांचा बनता है